पेपर-313, आधुनिक हिन्दी पद्य का इतिहास
अभ्यासक्रम-वर्ष-2019-2020

यूनिट-		भारतेन्दु युग
1	1	काव्य प्रवृत्तियाँ
	2	श्रीधर पाठकः कवि के रूप में
	3	भारतेन्दु की मुकरियाँ
2		द्विवेदी युग
	1	काव्य प्रवृत्तियाँ
	2	रामनरेश त्रिपाठीः कवि के रूप में
	3	साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)- कृति परिचय
3		छायावाद
	1	काव्य प्रवृत्तियाँ
	2	महादेवी वर्मा- कवि के रूप में
	3	आँसू (जयशंकर प्रसाद) – कृति परिचय
4		प्रगतिवाद
	1	काव्य प्रवृत्तियाँ
	2	सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाः कवि के रूप में
	3	आग का आईना (केदारनाथ अग्रवाल) – कृति परिचय

Unit- 3 छायावाद

प्रश्नः1 छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृतियों की चर्चा कीजिए ।

हिन्दी कविता में वाद-परंपरा का प्रारंभ छायावाद से माना जाता है । द्वीवेदी युग के समाप्त होते-होते हिन्दी में एक नूतन काव्य-धारा जन्म लेने लगी थी जो आगे चलकर छायावाद के नाम से पहचानी गई । छायावाद की कालावधि सन् 1917 से 1936 तक मानी गई है। वस्तुत: इस कालावधि में छायावाद इतनी प्रमुख प्रवृति रही है कि सभी कवि इससे प्रभावित हुए और इसके नाम पर ही इस युग को छायावादी युग कहा जाने लगा। छायावादी काव्य पर बात करते हुए डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता लिखते है कि-

> छायावाद अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टियों से अनेक नवीनताएँ लेकर आया । आधुनिक कविता में छायावाद की अपनी एक अलग पहचान है ।
> (आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ.ओमप्रकाश गुप्ता,पृ.55)

छायावादी काव्य का स्वरूपः

छायावाद के स्वरूप को समझने के लिए उस पृष्ठभूमि को समझ लेना आवश्यक है,जिसने उसे जन्म दिया। व्यक्तिगत भावनाओं का चित्रण होने लगा तभी छायावाद का जन्म हुआ और कविता इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर कल्पना लोक में विचरण करने लगी।

छायावाद की परिभाषाः

विभिन्न विद्वानों ने छायावाद की भिन्न-भिन्न परिभाषाएं की हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

> "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में,जहां उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात् जहां कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।... छायावाद एक शैली विशेष है,जो लाक्षणिक प्रयोगों,अप्रस्तुत विधानों और अमूर्त उपमानों को लेकर चलती है।" दूसरे अर्थ में उन्होंने छायावाद को चित्र-भाषा-शैली कहा है।

महादेवी वर्मा ने छायावाद का मूल सर्वात्मवाद दर्शन में माना है। उन्होंने लिखा है कि

> "छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है, जो मूर्त और अमूर्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है। ... अन्यत्र वे लिखती हैं कि छायावाद प्रकृति के बीच जीवन का उद्-गीथ है।

डॉ. राम कुमार वर्मा ने छायावाद और रहस्यवाद में कोई अंतर नहीं माना है। छायावाद के विषय में उनके शब्द हैं-

"परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा पर। यही छायावाद है।"

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का मंतव्य है -

"मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है। ।"

1. वैयक्तिकता :

छायावादी काव्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य है। कविता वैयक्तिक चिंतन और अनुभूति की परिधि में सीमित होने के कारण अंतर्मुखी हो गई, कवि के अहम् भाव में निबद्ध हो गई। कवियों ने काव्य में अपने सुख-दु:ख,उतार-चढ़ाव,आशा-निराशा की अभिव्यक्ति खुल कर की। उसने समग्र वस्तुजगत को अपनी भावनाओं में रंग कर देखा। जयशंकर प्रसाद का'आंसू' तथा सुमित्रा नंदन पंत के 'उच्छवास' और 'आंसू' व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति के सुंदर निदर्शन हैं। इसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्व सन्निहित है।डॉ. शिवदान सिंह चौहान इस संबंध में अत्यंत मार्मिक शब्दों में लिखते हैं -"कवि का मैं प्रत्येक प्रबुद्ध भारतवासी का मैं था,इस कारण कवि ने विषयगत दृष्टि से अपनी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए जो लाक्षणिक भाषा और अप्रस्तुत रचना शैली अपनाई,उसके संकेत और प्रतीक हर व्यक्ति के लिए सहज प्रेषणीय बन सके।"छायावादी कवियों की भावनाएं यदि उनके विशिष्ट वैयक्तिक दु:खों के रोने-धोने तक ही सीमित रहती,उनके भाव यदि केवल आत्मकेंद्रित ही होते तो उनमें इतनी व्यापक प्रेषणीयता कदापि न आ पाती। निराला ने लिखा है-

मैंने मैं शैली अपनाई,
देखा एक दु:खी निज भाई
दुख की छाया पड़ी हृदय में
झट उमड़ वेदना आई

इससे स्पष्ट है कि व्यक्तिगत सुख-दु:ख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख-दुख की अनूभूति ने ही नए कवियों के भाव-प्रवण और कल्पनाशील हृदयों को स्वच्छंदतावाद की ओर प्रवृत्त किया।

2. प्रकृति-सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना :

छायावादी कवि का मन प्रकृति चित्रण में खूब रमा है और प्रकृति के सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता रही है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को काव्य में सजीव बना दिया है। प्रकृति सौंदर्य और प्रेम की अत्यधिक व्यंजना के कारण ही डॉ. देवराज ने छायावादी काव्य को 'प्रकृति-काव्य' कहा है। छायावादी काव्य में प्रकृति-सौंदर्य के अनेक चित्रण मिलते हैं; जैसे 1. आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण 2.उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण 3.प्रकृति का मानवीकरण 4.नारी रूप में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन 5.आलंकारिक चित्रण 6.प्रकृति का वातावरण और पृष्ठभूमि के रूप में चित्रण 7. रहस्यात्मक अभिव्यक्ति के साधन के रूप में चित्रण।

प्रसाद,पंत,निराला,महादेवी आदि छायावाद के सभी प्रमुख कवियों ने प्रकृति का नारी रूप में चित्रण किया और सौंदर्य व प्रेम की अभिव्यक्ति की। छायावादी कवि ने निजी अनुभूतियों का व्यक्तिकरण प्रकृति के माध्यम से किया है; जैसे-

मैं नीर भरी दुख की बदली

छायावादी कवि सौंदर्यानुभूति से अभिभूत है। अपने आंतरिक सौंदर्य का उद्घाटन प्रकृति के माध्यम से करता हुआ दिखाई पड़ता है-

शशि मुख पर घूंघट डाले,अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूलि में,कौतूहल से तुम आए ...प्रसाद

अधिकांश छायावादी कवियों ने प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है,परंतु कहीं-कहीं उसके उग्र रूप का चित्रण भी हुआ है।

3.शृंगारिकता :

छायावादी काव्य में शृंगार-भावना की प्रधानता है,परंतु यह शृंगार रीतिकालीन स्थूल एवं ऐन्द्रिय शृंगार से भिन्न है।छायावादी शृंगार-भावना मानसिक एवं अतीन्द्रिय है। यह शृंगार-भावना दो रूपों में अभिव्यक्त हुई है- 1. नारी के अतीन्द्रिय सौंदर्य चित्रण द्वारा 2. प्रकृति पर नारी-भावना के आरोप के माध्यम से। नारी का अतीन्द्रिय सौंदर्य चित्रण प्रसाद जी द्वारा श्रद्धा के सौंदर्य में द्रष्टव्य है-

नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघवन बीच गुलाबी रंग।

निराला की 'जुही की कली' कविता में दूसरे प्रकार की शृंगार-भावना का चित्र है। प्रसाद ने'कामायनी' में सौंदर्य को चेतना का उज्ज्वल वरदान माना है। इस प्रकार छायावादी शृंगार-भावना और उसके सभी उपकरणों(नारी,सौंदर्य,प्रेम) का चित्रण सूक्ष्म एवं उदात्त है। उसमें वासना की गंध बहुत कम है।

4. रहस्यानुभूति :

छायावादी कवि को अज्ञात सत्ता के प्रति एक विशेष आकर्षण रहा है। वह प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में इसी सत्ता के दर्शन करता है। उसका इस अंनत के प्रति प्रमुख रूप से विस्मय तथा जिज्ञासा का भाव है। लेकिन उनका रहस्य जिज्ञासामूलक है, उसे कबीर और दादू के रहस्यवाद के समक्ष खड़ा नहीं किया जा सकता।निराला तत्व ज्ञान के कारण, तो पंत प्राकृतिक सौंदर्य से रहस्योन्मुख हुए। प्रेम और वेदना ने महादेवी को रहस्योन्मुख किया तो प्रसाद ने उस परमसत्ता को अपने बाहर देखा । छायावादी कवियों की कुछ रहस्य अनुभूतियों के उदाहरण देखिए-

प्रिय चिरन्तन है सजनि
क्षण-क्षण नवीन सुहागिनी मैं
तुम मुझ में फिर परिचय क्या! --महादेवी
प्रथम रश्मि का आना रंगिणि
तुने कैसे पहचाना? -- पंत

5. तत्व चिंतन :

छायावादी कविता में अद्वैत-दर्शन,योग-दर्शन,विशिष्टाद्वैत-दर्शन,आनंदवाद आदि के अंतर्गत दार्शनिक चिंतन भी मिलता है। प्रसाद का मूल दर्शन आनंदवाद है तो महादेवी ने अद्वैत,सांख्य एवं योग दर्शन का विवेचन अपने ढ़ग से किया है।

6. वेदना और करुणा की विवृत्ति :

छायावादी कविता में वेदना की अभिव्यक्ति करुणा और निराशा के रूप में हुई है। हर्ष-शोक,हास-रुदन, जन्म-मरण,विरह-मिलन आदि से उत्पन्न विषमताओं से घिरे हुए मानव-जीवन को देखकर कवि हृदय में वेदना और करुणा उमड़ पड़ती है।जीवन में मानव-मन की आकांक्षाओं और अभिलाषाओं की असफलता पर कवि-हृदय क्रन्दन करने लगता है। छायावादी कवि सौंदर्य प्रेमी होता है,किंतु सौंदर्य की क्षणभंगुरता को देख उसका हृदय आकुल हो उठता है। उत्पत्ति ही वेदना को मानते हैं -

वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान।
उमड़ कर आंखों से चुपचाप, बही होगी कविता अजान॥

7. मानवतावादी दृष्टिकोण :

छायावादी काव्य भारतीय सर्वात्मवाद तथा अद्वैतवाद से गहरे रूप से प्रभावित हुआ। इस काव्य पर रामकृष्ण परमहंस,विवेकानंद,गांधी,टैगोर तथा अरविंद के दर्शन का भी काफी प्रभाव रहा।स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के कारण छायावादी कवि को साहित्य के समान धर्म,दर्शन आदि में भी रुढ़ियों एवं मिथ्या परम्पराएं मान्य नहीं हैं।

8.नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण :

नारी के प्रति छायावाद ने सर्वथा नवीन दृष्टिकोण अपनाया है। यहां नारी वासना की पूर्ति का साधन नहीं है,यहां तो वह प्रेयसी,जीवन-सहचरी,मां आदि विविध रूपों में उतरी है। उसका मुख्य रूप प्रेयसी का ही रहा है। यह प्रेयसी पार्थिव जगत की स्थूल नारी नहीं है,वरन कल्पना लोक की सुकुमारी देवी है। नारी के संबंध में प्रसाद जी कहते हैं-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग-पगतल में
पीयूष-स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में

छायावादी कवि ने युग-युग से उपेक्षित नारी को सदियों की कारा से मुक्त करने का स्वर अलापा। छायावादी कवि कह उठता है - "मुक्त करो नारी को,युग-युग की कारा से बंदिनी नारी को।"

9. स्वच्छंदतावाद :

छायावादी कवि ने अहंवादी होने के कारण विषय,भाव,कला,धर्म,दर्शन और समाज के सभी क्षेत्रों में स्वछंदतावादी प्रवृत्ति को अपनाया। उसे अपने हृदयोदगार को अभिव्यक्त करने के लिए किसी प्रकार का शास्त्रीय बंधन और रुढ़ियां स्वीकार नहीं हैं। भाव-क्षेत्र में भी उसने इसी क्रांति का प्रदर्शन किया। उसमें 'मैं' की शैली अपनाई, हालांकि उसके 'मैं' में समूचा समाज सन्निहित है।

10.देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना :

राष्ट्रीय जागरण की क्रोड़ में पलने-पनपने वाला स्वच्छंदतावादी छायावाद साहित्य यदि रहस्यात्मकता और राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को साथ-साथ लेकर चला है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। सच तो यह है कि राष्ट्रीय जागरण ने छायावाद के व्यक्तिवाद को असामाजिक पथों पर भटकने से बचा लिया। छायावादी कवि में आंतरिकता की कितनी भी प्रधानता क्यों न हो वह अपने युग से निश्चित रूप से प्रभावित हुआ। यही कारण है कि जयशंकर प्रसाद पुकार उठते हैं -

अरुण यह मधुमय देश हमारा .
हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

माखन लाल चतुर्वेदी कह उठते हैं -

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

11.प्रतीकात्मकता :

प्रतीकात्मकता छायावादियों के काव्य की कला पक्ष की प्रमुख विशेषता है। प्रकृति पर सर्वत्र मानवीय भावनाओं का आरोप किया गया और उसका संवेदनात्मक रूप में चित्रण किया गया,इससे यह स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व से विहीन हो गई और उसमें प्रतीकात्मकता का व्यवहार किया गया।

12.चित्रात्मक भाषा एवं लाक्षणिक पदावली :

अन्य अनुपम विशिष्टताओं के अतिरिक्त केवल चित्रात्मक भाषा के कारण हिंदी वाङ्मय में छायावादी काव्य को स्वतंत्र काव्य धारा माना जा सकता है।कविता के लिए चित्रात्मक भाषा की अपेक्षा की जाती है और इसी गुण के कारण उसमें बिम्बग्राहिता आती है। छायावादी कवि इस कला में परम विदग्ध हैं।"छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति तत्त्व को मिलाया, निराला ने उसे मुक्तक छंद दिया,पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुड़ौल और सरस बनाया तो महादेवी ने उसमें प्राण डाले,उसकी भावात्मकता को समृद्ध किया।"प्रसाद की निम्नांकित पंक्तियों में भाषा की चित्रात्मकता की छटा देखते ही बनती है;-

शशि मुख पर घूंघट डाले,अंचल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूलि में,कौतूहल से तुम आए।

इसमें अप्रस्तुत-विधान और अभिव्यंजना-शैली में शतश: नवीन प्रयोग किए। मूर्त में अमूर्त का विधान उसकी कला का विशेष अंग बना। निराला जी विधवा का चित्रण करते हुए लिखते हैं- "वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी"।

13. गीतात्मकता :

छायावादी कवि केवल साहित्यिक ही नहीं वरन संगीत का भी कुशल ज्ञाता है। छायावाद का काव्य छंद और संगीत दोनों दृष्टियों से उच्च कोटि का है। इसमें प्राचीन छंदों के प्रयोग के साथ-साथ नवीन छंदों का भी निर्माण किया गया। इसमें मुक्तक छंद और अतुकांत कविताएं भी

लिखी गई। छायावादी कवि प्रणय,यौवन और सौंदर्य का कवि है। गीति-शैली उसके गृहीत विषय के लिए उपयुक्त थी। गीति-काव्य के सभी गुण-संक्षिप्तता,तीव्रता,आत्माभिव्यंजना,भाषा की मसृणता आदि उपलब्ध होते हैं।

14. अलंकार-विधान :

अलंकार योजना में प्राचीन अलंकारों के अतिरिक्त अंग्रेजी साहित्य के दो नवीन अलंकारों- मानवीकरण तथा विशेषणविपर्यय का भी अच्छा उपयोग किया गया है। नवीन उपमानों की उद्‌भावना की है; जैसे - "कीर्ति किरण सी नाच रही है " तथा "बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल।" इसके अतिरिक्त उपमा,रूपक,उल्लेख,संदेह,विरोधाभास,रूपकातिशयोक्ति तथा व्यतिरेक आदि अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग किया गया है।

निष्कर्षः

भक्ति काल के बाद आधुनिक काल का यह तृतीय चरण हिंदी साहित्य के इतिहास का दूसरा स्वर्ण-युग कहकर रेखांकित किया जा सकता है।इस कविता का गौरव अक्षय है,उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है।"

प्रश्नः 2 महादेवी वर्मा का कवयित्री के रूप में परिचय दीजिए ।

महादेवी वर्मा की गिनती हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभ सुमित्रानन्दन पन्त, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के साथ की जाती है। महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली हिन्दी को कोमलता और मधुरता से संसिक्त कर सहज मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का द्वार खोला, विरह को दीपशिखा का गौरव दिया, व्यष्टिमूलक मानवतावादी काव्य के चिंतन को प्रतिष्ठापित किया। महादेवी वर्मा के गीतों का नाद-सौंदर्य, पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। डॉ. ओमप्रकाश गुता कवयित्री के बारे में लिखते है कि-

> महादेवी वर्मा को 'आधुनिक काल की मीराबाई' कहा जाता है। महादेवी जी छायावाद रहस्यवाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं। हिन्दुस्तानी स्त्री की उदारता, करुणा, सात्विकता, आधुनिक बौद्धिकता, गंभीरता और सरलता महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व में समाविष्ट थी।(आधुनिक हिन्दी सा. इतिहास- डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, पृ. 65)

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा (जन्म: 26 मार्च, 1907, फ़र्रुख़ाबाद - मृत्यु: 11 सितम्बर, 1987, प्रयाग) हिन्दी भाषा में महादेवी प्रख्यात कवयित्री हैं। वर्मा अपने परिवार में कई पीढ़ियों के बाद उत्पन हुई। उनके परिवार में दो सौ सालों से कोई लड़की पैदा नहीं हुई थी, यदि होती तो उसे मार दिया जाता था। दुर्गा पूजा के कारण आपका जन्म हुआ। आपके दादा फ़ारसी और उर्दू तथा पिताजी अंग्रेज़ी जानते थे। माताजी जबलपुर से हिन्दी सीख कर आई थी, महादेवी वर्मा ने पंचतंत्र और संस्कृत का अध्ययन किया। महादेवी वर्मा जी को काव्य प्रतियोगिता में 'चांदी का कटोरा' मिला था। जिसे इन्होंने गाँधीजी को दे दिया था। महादेवी वर्मा कवि सम्मेलन में भी जाने लगी थी, वो सत्याग्रह

आंदोलन के दौरान कवि सम्मेलन में अपनी कवितायें सुनाती और उनको हमेशा प्रथम पुरस्कार मिला करता था। महादेवी वर्मा मराठी मिश्रित हिन्दी बोलती थी।

महादेवी वर्मा के पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा एक वकील थे और माता श्रीमती हेमरानी देवी थीं। महादेवी वर्मा के माता-पिता दोनों ही शिक्षा के अनन्य प्रेमी थे। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की विलक्षणता से अभिभूत रचनाकारों ने उन्हें 'साहित्य सामाज्ञी', 'हिन्दी के विशाल मंदिर की वीणापाणि', 'शारदा की प्रतिमा' आदि विशेषणों से अभिहित करके उनकी असाधारणता को लक्षित किया। महादेवी जी ने एक निश्चित दायित्व के साथ भाषा, साहित्य, समाज, शिक्षा और संस्कृति को संस्कारित किया। कविता में रहस्यवाद, छायावाद की भूमि ग्रहण करने के बावज़ूद सामयिक समस्याओं के निवारण में महादेवी वर्मा ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

शिक्षा

महादेवी वर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में हुई। महादेवी वर्मा ने बी.ए. जबलपुर से किया। महादेवी वर्मा अपने घर में सबसे बड़ी थी उनके दो भाई और एक बहन थी। 1919 में इलाहाबाद में 'क्रॉस्थवेट कॉलेज' से शिक्षा का प्रारंभ करते हुए महादेवी वर्मा ने 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। तब तक उनके दो काव्य संकलन 'नीहार' और 'रश्मि' प्रकाशित होकर चर्चा में आ चुके थे। महादेवी जी में काव्य प्रतिभा सात वर्ष की उम्र में ही मुखर हो उठी थी। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी कविताऐं देश की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगीं थीं।

विवाह

उन दिनों के प्रचलन के अनुसार महादेवी वर्मा का विवाह छोटी उम्र में ही हो गया था परन्तु महादेवी जी को सांसारिकता से कोई लगाव नहीं था अपितु वे तो बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं और स्वयं भी एक बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहतीं थीं। विवाह के बाद भी उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी। महादेवी वर्मा की शादी 1914 में 'डॉ. स्वरूप नरेन वर्मा' के साथ इंदौर में 9 साल की उम्र मंक हुई, वो अपने माँ पिताजी के साथ रहती थीं क्योंकि उनके पति लखनऊ में पढ़ रहे थे।

विरासत

शिक्षा और साहित्य प्रेम महादेवी जी को एक तरह से विरासत में मिला था। महादेवी जी में काव्य रचना के बीज बचपन से ही विद्यमान थे। छः सात वर्ष की अवस्था में भगवान की पूजा करती हुई माँ पर उनकी तुकबन्दी:

ठंडे पानी से नहलाती
ठंडा चन्दन उन्हें लगाती
उनका भोग हमें दे जाती
तब भी कभी न बोले हैं
मां के ठाकुर जी भोले हैं।

वे हिन्दी के भक्त कवियों की रचनाओं और भगवान बुद्ध के चरित्र से अत्यन्त प्रभावित थी। उनके गीतों में प्रवाहित करुणा के अनन्त स्रोत को इसी कोण से समझा जा सकता है। वेदना और

करुणा महादेवी वर्मा के गीतों की मुख्य प्रवृति है। असीम दुःख के भाव में से ही महादेवी वर्मा के गीतों का उदय और अन्त दोनों होता है।

महिला विद्यापीठ की स्थापना :

महादेवी वर्मा ने अपने प्रयत्नों से इलाहाबाद में 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की स्थापना की। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। महादेवी वर्मा पाठशाला में हिन्दी-अध्यापक से प्रभावित होकर ब्रजभाषा में समस्या पूर्ति भी करने लगीं। फिर तत्कालीन खड़ी बोली की कविता से प्रभावित होकर खड़ी बोली में रोला और हरिगीतिका छन्दों में काव्य लिखना प्रारम्भ किया। उसी समय माँ से सुनी एक करुण कथा को लेकर सौ छन्दों में एक खण्डकाव्य भी लिख डाला। 1932 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार सँभाला।

कृतियाँ :

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ एक विशिष्ट गद्यकार थीं। 'यामा' में उनके प्रथम चार काव्य-संग्रहों की कविताओं का एक साथ संकलन हुआ है। 'आधुनिक कवि-महादेवी' में उनके समस्त काव्य से उन्हीं द्वारा चुनी हुई कविताऐं संकलित हैं। कवि के अतिरिक्त वे गद्य लेखिका के रूप में भी पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुकी हैं। 'स्मृति की रेखाएं' (1943 ई.) और 'अतीत के चलचित्र' (1941 ई.) उनकी संस्मरणात्मक गद्य रचनाओं के संग्रह हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ' (1942 ई.) में सामाजिक समस्याओं, विशेषकर अभिशप्त नारी जीवन के जलते प्रश्नों के सम्बन्ध में लिखे उनके विचारात्मक निबन्ध संकलित हैं। रचनात्मक गद्य के अतिरिक्त 'महादेवी का विवेचनात्मक गद्य' में तथा 'दीपशिखा', 'यामा' और 'आधुनिक कवि-महादेवी' की भूमिकाओं में उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का भी पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं -

काव्य

- नीहार (1930)
- रश्मि (1932)
- नीरजा (1934)
- सांध्यगीत (1936)
- दीपशिखा (1942)
- यामा
- सप्तपर्णा

गद्य

- अतीत के चलचित्र
- स्मृति की रेखाएँ
- पथ के साथी
- मेरा परिवार

निबंध

- शृंखला की कड़ियाँ
- विवेचनात्मक गद्य

- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध

ललित निबंध

- क्षणदा

काव्य संग्रह :

महादेवी वर्मा के 1934 में 'नीरजा', 1936 में 'सांध्यगीत' नामक संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में 'यामा' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। महादेवी वर्मा ने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किए। इसके अतिरिक्त उनके 18 काव्य और गद्य कृतियाँ हैं जिनमें 'मेरा परिवार', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'शृंखला की कड़ियाँ' और 'अतीत के चलचित्र' प्रमुख हैं।

काव्य विशेषताएँ :

महादेवी के काव्य में भाव समृद्धि तथा शैल्पिक सौन्दर्य का आकर्षक समन्वय है। आपके काव्य की उभयपक्षीय विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

भाव पक्ष

महादेवी जी के काव्य में आत्मनिवेदन का स्वर प्रधान है। अपने हृदय की विविध अनुभूतियों को ही कवयित्री ने काव्य का विषय बनाया है। अज्ञात प्रियतम के प्रति विरह व्यथा का निवेदन, मिलन का संकल्प, रहस्यमयी संवेदनाएँ और प्रकृति का कोमलकान्त दृश्यांकन आपके गीतों के प्रधान विषय हैं। आध्यात्मिकता और दार्शनिकता के झीने अंचल से आवृत्त आपके मृदुल उदगार एक मोहक भाव जगत् की सृष्टि करते हैं। महादेवी जी के काव्य का प्रधान रस श्रृंगार है। महादेवी का समस्त काव्य वेदनामय है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत् की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिनसे उस अनुभूति-क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेवी इस वेदना को उस दुःख की भी संज्ञा देती हैं, "जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है किन्तु विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाला दुःख सामान्यतया लौकिक दुःख ही होता है, जो भारतीय साहित्य की परम्परा में करुण रस का स्थायी भाव होता है। महादेवी ने इस दुःख को नहीं अपनाया है। कहती तो हैं कि "मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं, एक वह, जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बन्धनों में बाँध देता है और दूसरा वह जो काल और सीमा के बन्धन में पड़े हुए असीम चेतन का क्रन्दन है" किन्तु उनके काव्य में पहले प्रकार का नहीं, दूसरे प्रकार का 'क्रन्दन' ही अभिव्यक्त हुआ है।

विषयवस्तु और दृष्टिकोण :

वेदना की इस एकान्त साधना के फलस्वरूप महादेवी की कविता में विषयों का वैविध्य बहुत कम है। उनकी कुछ ही कविताएं ऐसी हैं, जिनमें राष्ट्रीय और सांस्कृतिक उद्बोधन अथवा प्रकृति का स्वतन्त्र चित्रण हुआ है। शेष सभी कविताओं में विषयवस्तु और दृष्टिकोण एक ही होने के कारण उनकी काव्यभूमि विस्तृत नहीं हो सकी है। इससे उनके काव्य को हानि और लाभ दोनों हुआ है। हानि यह हुई है कि विषय-परिवर्तन न होने से उनके समस्त काव्य में एकरसता और भावावृति बहुत अधिक है।

प्रकृति निरूपण

महादेवी अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन के क्षणों में आध्यात्मिक छोरों का स्पर्श करने लगती हैं। महादेवी जी ने लोक चेतना से भी स्वयं को पूर्णतया विच्छिन्न नहीं किया है। उनके पास भी सन्देश हैं, प्रेरणा मार्ग-दर्शन है।

अनुभूतियाँ :

महादेवी वर्मा का काव्य अनुभूतियों का काव्य है। उसमें देश, समाज या युग का चित्रांकन नहीं है, बल्कि उसमें कवयित्री की निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। उनकी अनुभूतियाँ प्रायः अज्ञात प्रिय के प्रति मौन समर्पण के रूप में हैं। उनमें प्रेम एक प्रमुख तत्व है जिस पर अलौकिकता का आवरण पड़ा हुआ है। इनमें प्रायः सहज मानवीय भावनाओं और आकर्षण के स्थूल संकेत नहीं दिए गए हैं, बल्कि प्रतीकों के द्वारा भावनाओं को व्यक्त किया गया है। एवं विशाल है, जो अलौकिक है-

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ ।
नींद भी मेरी अचल निस्पंद कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत् के प्रथम स्पंदन में,
प्रलय में मेरा पता पद-चिह्न जीवन में।
मैं नीर भरी दुःख की बदली ।
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा कभी न अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी थी कल मिट आज चली।

भाषा-शैली :

महादेवी अपनी काव्य भाषा की निर्मात्री स्वयं ही हैं, यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा। अभिव्यक्ति की जो सामर्थ्य, भाव व्यंजना का जो मार्मिक सौष्ठव, आपकी भाषा वहन करती है, वह अन्यत्र पंतजी में ही प्राप्त होता है। आपकी भाषागत कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- आपकी भाषा का एक विशिष्ट स्तर है, जो स्वभावतः संस्कृत शब्दावली की ओर झुका हुआ है। तत्सम शब्द प्रधान होते हुए भी इस भाषा रूप में क्लिष्टता या रूक्षता नहीं हैं। उसमें प्रवाह है, लय है।
- महादेवी जी ने भाषा को अद्भुत मृदुता और मधुरता प्रदान की है। भाव और लय का मनोहारी संगम प्रस्तुत करने में आपकी भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

सम्मान और पुरस्कार :

सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में 'साहित्यकार संसद' की स्थापना की और पं. इला चंद्र जोशी के सहयोग से 'साहित्यकार' का संपादन सँभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गई। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'पद्म भूषण' की उपाधि और 1969 में

'विक्रम विश्वविद्यालय' ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से अलंकृत किया। इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिए 1934 में 'सेकसरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाओं' के लिए 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 1943 में उन्हें 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' एवं उत्तर प्रदेश सरकार के 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ।

पुरस्कार सूची

- 1934 :सेकसरिया पुरस्कार
- 1942 :द्विवेदी पदक
- 1943 :मंगला प्रसाद पुरस्कार
- 1943 :भारत भारती पुरस्कार
- 1956 :पद्म भूषण
- 1979 :साहित्य अकादेमी फेलोशिप
- 1982 :ज्ञानपीठ पुरस्कार
- 1988 :पद्म विभूषण

निधन :

महादेवी वर्मा का निधन 11 सितम्बर, 1987, को प्रयाग में हुआ था। महादेवी वर्मा ने निरीह व्यक्तियों की सेवा करने का व्रत ले रखा था। वे बहुधा निकटवर्ती ग्रामीण अंचलों में जाकर ग्रामीण भाई-बहनों की सेवा सुश्रुषा तथा दवा निःशुल्क देने में निरत रहती थी।

निष्कर्षः

वास्तव में वे निज नाम के अनुरूप ममतामयी, महीयसी महादेवी थी। भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवन दर्शन को आत्मसात किया था। महादेवी वर्मा ने एक निर्भीक, स्वाभिमानी भारतीय नारी का जीवन जिया। राष्ट्र भाषा हिन्दी के सम्बन्ध में उनका कथन है "हिन्दी भाषा के साथ हमारी अस्मिता जुडी हुई है। हमारे देश की संस्कृति और हमारी राष्ट्रीय एकता की हिन्दी भाषा संवाहिका है।"

प्रश्नः3 आँसू (जयशंकर प्रसाद) काव्य का एक कृति के रूप में परिचय दीजिए ।

आँसू जयशंकर प्रसाद की एक विशिष्ट रचना है। इसका प्रथम संस्करण 1925 ई. में साहित्य - सदन, चिरगाँव, झाँसी से प्रकाशित हुआ था। 'आँसू' एक श्रेष्ठ गीतसृष्टि है, जिसमें प्रसाद की व्यक्तिगत जीवनानुभूति का प्रकाशन हुआ है। अनेक प्रयत्नों के बावजूद इस काव्य की प्रेरणा के विषय में निश्चित रूप से कहना कठिन है, किंतु इतना निर्विवाद है कि इसके मूल में कोई प्रेम-कथा अवश्य है। डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता का आँसू काव्य पर कहना है कि-

> 'आँसू' में प्रत्यक्ष रीति से कवि ने अपने प्रिय के समक्ष निवेदन किया है। कवि के व्यक्तित्व का जितना मार्मिक प्रकाशन इस काव्य में हुआ है उतना अन्यन्न नहीं दिखाई देता।
>
> (आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता. पृ. 59)

'आँसू' काव्य का परिचयः

श्री जयशंकर प्रसाद हिंदी के भावुक कवि और कुशल कलाकार हैं। इसे कोई यदि उनकी एक ही रचना में देखना चाहें तो उसे आँसू की ओर ही इंगित किया जा सकता है। आँसू में प्रेम की स्मृति इतनी सत्यता के साथ अभिव्यक्त हुई है कि हमारा कवि के साथ अविलम्ब साधारणीकरण हो जाता है। आँसू कवि के जीवन की वास्तविक प्रयोगशाला को आविष्कार है। जीवन में प्रत्येक अभिलाषा को पूरी करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और उसमें असफल होने पर व्यक्ति चिंता, दुःख, असंतोष और कुण्ठा से पीड़ित होता है। आँसू इस प्रकार की प्रेमभावनाओं की चरम परिणति है। आँसू का संपूर्ण महत्व कवि के करुणाकलित हृदय से मुखरित विफल रागिनी में देखा जा सकता है। आँसू में कवि ने लौकिक-प्रेम की व्यक्तिगत विरहानुभूति को अभिव्यक्त किया है।

आँसू का मुख्य भाव विरह-शृंगार है। आँसू का आधार असीम व्यक्ति है, जिसके मिलन सुख की स्मृति ने कवि के हृदय में वेदना-लोक की सृष्टि की है। कवि के हृदय में प्रिय की स्मृतियों की एक बस्ती ही बस गई है। उनके हृदय में विरह की आग जल रही है-

शीतल ज्वाला जलती है, ईँधन होता दृग जल का,
यह व्यर्थ साँस चल-चल कर करती है काम अनिल का।

कवि अपने प्रेम को याद कर कह रहा है कि जिस प्रकार समुद्र के मध्य बडवाग्नि सुप्त रहती है उसी प्रकार उसके प्रणय-सिंधु के तल में भी विरह की अग्नि छिपी हुई थी। उसे अपनी प्रेयसी की निष्ठुरता याद आती है। कवि अपने बीते हुए प्रेम-प्रसंगों को स्मृत कर रहा है-

मादक थी मोहमयी थी, मन बहलाने की क्रीड़ा,
अब हृदय हिला देती है वह मधुर प्रेम की पीड़ा।

कवि के मन में प्रिय-मिलन की अभिलाषाएँ रह-रहकर चेतन हो उठती हैं। किन्तु उसी क्षण सोयी हुई व्यथा जाग पड़ती है। जिस प्रकार आकाश घनीभूत होकर दुर्दिन में जल-बिंदुओं की वर्षा करता है। उसी प्रकार कवि की चेतना के आकाश पर अपने विगत जीवन की स्मृतियाँ आ-आकर घिर जाती हैं। घनीभूत पीड़ा कवि के मन को व्यथित कर देती है और जीवन की विषम परिस्थितियों में उसकी वेदना का यह मेघ आँसुओं की धारा के रूप में बरस पड़ता है-

जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छायी,
दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आई।

कवि को अपनी प्रिया की लज्जा की याद आती है। कवि के मन के निर्मल आकाश में प्रियतम की मधुर स्मृतियों का झंझावात आकर चलने लगता है। प्रियतम की मधुर स्मृतियों ने आकर कवि के हृदय में एक वेदना विह्वल कोलाहल भर दिया है।

आँसू के नायक को दुर्दिन में अपने गत वैभव-विलास पूर्ण जीवन का स्मरण हो आता है, उसकी प्रेयसी की मदमाती छवि उसकी आँखों में बस जाती है। वह प्रियतम का मधुर, लजानेवाला मुख देखते ही उसकी ओर खींच गया था। प्रिय का सौंदर्य उसके शून्य-हृदय को आत्म-विभोर कर देता है तभी वह एकदम उसके साथ एक होकर कहने लगा था-

परिचित से जाने कब के, तुम लगे उसी क्षण हमको।

उसमें वह अपना अस्तित्व ही भूल जाता है। प्रिय ने उस पर पूर्ण अधिकार जमा लिया था। जब मनुष्य के मन में किसी की स्मृति तीव्रतम हो उठती है, तो वह स्मृति के आधार की आकृति, उसकी बातों, उसके व्यापारों-कार्य-कलाप का बहुत विस्तार के +654
साथ मनन करने लगता है। हम आँसू के नायक को अपने प्रिय के शारीरिक सौंदर्य-वर्णन, उसके साथ मिलन-क्रीड़ाओं का उल्लेख करने में भी हर्ष विकंपित पाते हैं। चाँदनी की चाँदी भरी रातें सुख के सपनों की अधिक समय तक उसके कुंज में वर्षा नहीं करने पाई। वह तो कवि के निराशा पूर्ण पतझर के समान जीवन में प्रेम के पुष्प बिछाकर आया था। उसके प्रियतम का प्रवेश जीवन में एक विशेष उल्लास लेकर हुआ था। कवि के जीवन में निराशा के क्षण का तिमिर फैला हुआ था तब आशा ता उज्ज्वल दीप जलाकर उसने कवि के मन को प्रकाशित किया था। प्रियतम के सौंदर्य की स्मृति कवि को आ रही है। ये स्मृतियाँ कहीं असीम वेदना से भरे हुए कवि के हृदय को आकार प्रदान करती हैं तो कहीं प्रेमास्पद की निर्ममता का उद्‌घाटन करती हैं।

<u>शिल्प</u>

मुख्यतया वियोग की भूमिका पर प्रतिष्ठित होते हुए भी 'आँसू' के अंत में आशा-विश्वास का समावेश कर दिया गया है। शिल्प की दिशा से 'आँसू' वैभव सम्पन्न है। प्रिया के रूप वर्णन में सार्थक प्रतीकों का प्रयोग ब्राह्य सौन्दर्य के साथ आंतरिक गुणों का भी प्रकाशन करता है।

"मानव जीवन वेदी पर, परिणय हो विरह मिलन का।
सुख दुख दोनों नाचेंगे, है खेल आँख और मन का ॥"

इन पंक्तियों में कवि अपने निविड़ जीवन के सुख दुखात्मक अनुभूति का चित्रण करते हुए कहता है कि जीवन सुख और दुख की लीला भूमि है। यहाँ विरह और मिलन का परिणय हुआ करता है और शोक और आनन्द दोनों यहाँ नाचते रहते हैं ।

कवि प्रसाद को आज भी अपनी वेदना पर विश्वास है । प्रेमी के लिए सुख और दुख नियति का दान हैं। निसर्गतः दोनों में मौलिक अंतर नहीं है। केवल एक ही चेतना के दो रूप हैं। परिणय की पृष्ठभूमि देकर कवि प्रसाद निःसंकोच भाव से यह स्वीकार करते हैं कि संसार में विलास जीवन का वैभव आँखों में मद बनकर समाया है। वही विराट आकर्षण है, वही सुख का गठबन्धन है, किन्तु उसके अभाव में जो वेदना है, वही आँसू बनकर निकलती है।

मानव मन इस भौतिक जगत में प्रतिक्षण नयी नयी उलझनों में उलझता रहता है। वह सांसारिक जीवन जीता हुआ, आशा निराशा के क्षण जीता रहता है, मिलन विरह के गीत गाता रहता है। अब मिलन की आशा किरण उसे दिखायी देती है तो वह गाता है – चेतना लहर न उठेगी, जीवन समुद्र थिर होगा।" लेकिन निराशा के क्षण में उसका मन सहज भाव से कह बैठता है – "नाविक इस सूने तट पर, किन लहरों में खे लाया।"

इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद अन्तर्द्‌वंद्‌व में भी यह अभिलाषा करते हैं कि यौवन काल में दुख सुख के पालने पर झूलते रहे, वह स्थिति बनी रहे। प्रियतमा के सामीप्य के अभाव में जीवन दुखमय हो गया है, किन्तु जब वह सामीप्य लाभ प्राप्त हुआ तो दशा ही बदल गयी। इसी अन्तर्द्‌वंद्‌व में भी कवि की यही अभिलाषा है-

"मानव जीवन वेदी पर, परिणय हो विरह मिलन का।

सुख दुख दोनों नाचेंगे, है खेल आँख और मन का ॥"

'डॉ० प्रेम शंकर' ने ठीक ही कहा है – " जीवन पथ पर जाता हुआ मानव अन्त में एक सामंजस्य स्थापित करता है। आँसू की करुणा का यह चरमोत्कर्ष है।"

निष्कर्ष:

संक्षेप में, आँसू हिंदी का एक श्रेष्ठ विरह काव्य है। इसमें हलचल और उन्माद तथा अतृप्ति और पिपासा है। इसमें प्रेयसी की निष्ठुरता और हृदय की गहरी टीस है। आँसू में स्निग्ध आर्द्रता और हृदय की आहें हैं। जिस रूप-सी रमणी के संपर्क से कवि के दिल में एक अजीब मस्ती, प्रेमोन्माद, विलासितापूर्ण सरसता और यौवन-विलास का उद्वेग होता हुआ था, वह उसके विछोह से क्षण भर में विलुप्त हो गया। वह तो अपनी झलक दिखाकर शून्य में समा गई, किन्तु उसकी स्मृति नमिटी। जो तड़पन, जो आकुलता, जो व्यथा वह छोड़ गई वह बल खाता हुआ आँसू में बह आया।